पारंपरिक कलाओं की रंग-वर्षा में भीगा अंतर्लोक

छाया : खलीक

निरंतर क्रम में यह पच्चीसवाँ वर्ष था जब 26 जनवरी - गणतंत्र दिवस के अवसर पर लोक संस्कृति और परंपराओं के विविधवर्णी और अनूठे रंग लिए हुए लोकरंग का शुभारंभ हुआ। प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री रामेश्वर ठाकुर द्वारा उद्घाटित इस वर्ष के लोक कलाओं के इस समागम के विशिष्ट अतिथि थे भारत में इण्डोनेशिया के राजदूत लेफ्टीनेन्ट जनरल श्री आंदी मोहम्मद गालिब। अध्यक्षता संस्कृति एवं जनसंपर्क मंत्री श्री लक्ष्मीकांत शर्मा ने की। लोकरंग के रजत जयंती वर्ष होने से देश के चुनिंदा और विश्व प्रसिद्ध स्थापत्य की प्रतिकृति मंच का मुख्य आकर्षण थी। मंच में विशेष रूप से राजपूताना शैली के बीकानेर स्थित जूनागढ़ महल के झरोखों, मीनारों, राजप्रासाद और उसमें रचित अलंकरणों और चित्रांकनों की प्रतिकृतियाँ प्रदर्शित की गईं। इस बार लोकरंग में देश के अलावा कठपुतली कला के विश्व के अन्य 20 देशों के कठपुतली रूपाकारों को प्रदर्शित किया गया। 'अतुल्य भारत' के नाम से सज्जित इस वर्ष के लोकरंग में राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, कश्मीर, मणिपुर, हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा, असम, तमिलनाडु, केरल, उत्तरांचल, अरुणाचल, नगालैंड, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, पंजाब, त्रिपुरा, महाराष्ट्र, गोवा और कर्नाटक राज्यों की नृत्य प्रस्तुतियाँ हुईं। शिल्प मेला उत्सव का प्रमुख आकर्षण था। वस्त्र छपाई एवं बुनाई परंपरा एवं तकनीकी पर केन्द्रित कार्यशाला भी लोकरंग का प्रमुख हिस्सा था।

आयोजन के सात दिनों तक रसिक दर्शक, सांस्कृतिक परंपराओं की मिठास में डूबते उतराते रहे। पारंपरिक नृत्य, परिधान, गीत और शैलियाँ जहाँ देश-विदेश की संस्कृति को बयां कर रही थीं वहीं उसका बारीक संदेश जन-जन तक पहुँचा रही थीं। दर्शकों को करीब 350 शिल्पकारों के मिट्टी, टेराकोटा, काठ और शीशम की लकड़ी से बने कलारूपों को देखने का अवसर मिला।

सब कुछ इतना मनमोहक था कि इस वर्ष के उत्सव के समापन के साथ ही जैसे अगले वर्ष के उत्सव की प्रतीक्षा शुरू हो गई हो।

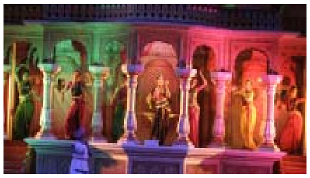

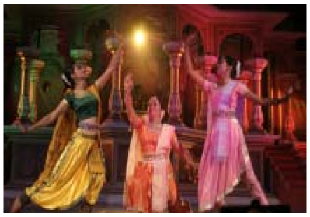

सभी छायाचित्र : संजय कुमार